भारतीय इतिहास के भारतीय स्तम्भ

डॉ. प्रवेश भारद्वाज

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त हुए भारतीय इतिहास–लेखन में कतिपय विसंगतियाँ भी दिखलाई पड़ती हैं। अधिकांश आधुनिक इतिहासकारों द्वारा मात्र तथ्यों के संग्रहीकरण एवं प्रस्तुतीकरण का कार्य किया गया है जबकि उनके द्वारा सामान्यीकरण अथवा कुछ ऐतिहासिक नियमों के प्रतिपादन का प्रयास नहीं किया गया है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त इतिहास लेखन में एक यह प्रवृत्ति भी दृष्टिगोचर होती है कि कुछ निश्चित अवधारणों, यथा–धर्म निरपेक्षता अथवा साम्प्रदायिक सद्भाव जैसे विषयों को ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास किया गया है। सरकार द्वारा प्रोत्साहित कुछ निश्चित क्षेत्रों में भी इतिहास–लेखन का कार्य स्वतंत्रोत्तर भारतवर्ष में हुआ है। इस काल की एक विशिष्ट प्रवृत्ति यह भी है कि इतिहास लेखक अतीत के उन पक्षों को, जो राष्ट्रीय अखण्डता अथवा अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति की दृष्टि से खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं, अपने इतिहास–लेखन में स्थान नहीं देते।